सांख्य दर्शन
(SANKHYA PHILOSOPHY)

त्रिगुण सिद्धान्त
(Theory of Three Gunas)

सांख्य दर्शन के प्रवर्त्तक *कपिल* हैं जिन्होंने विश्व के मूलाधार के रूप में प्रकृति और पुरूष इन दो तत्त्वों को स्वीकारा है। प्रकृति के तेईस विकार होते हैं। इस प्रकार विश्व के सृजन, पालन और विनाश में प्रकृति-पुरूष सहित पच्चीस तत्त्वों की भूमिका होती है। ईश्वरवादी सांख्यकों ने ईश्वर को जोड़कर छब्बीस तत्त्वों को माना है। अतः इस दर्शन में संख्या पर बल दिया गया है, जिसके कारण इसे *सांख्य दर्शन* कहा जाता है।

सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति त्रिगुणात्मिका होती है, जबकि पुरूष त्रिगुणातीत होता है। त्रिगुण हैं — सत्त्व, रज और तम। इन तीन गुणों की साम्यावस्था को ही प्रकृति कहते हैं। साम्यावस्था का अर्थ है कि प्रकृति में तीनों गुणों की मात्रा बराबर रहती है। उनकी मात्रा में इतना संतुलन होता है कि उनका कोई अलग अस्तित्व नहीं रहता है। वस्तुतः वे तीन गुण एक साथ सम्मिलित होकर त्रिगुणात्मक तत्त्व होते हैं, न कि तीन तत्त्व। यह त्रिगुणात्मक तत्त्व मात्र एक है जिसका नाम प्रकृति है। अतएव त्रिगुण या प्रकृति में कोई अन्तर नहीं है। फिर भी, प्रकृति को गुण या गुण को प्रकृति नहीं कहा जा सकता है। यह ठीक है कि गुण प्रकृति में ही अवस्थित होता है, और प्रकृति गुण के बिना सक्रिय नहीं हो पाती है। परन्तु उसे प्रकृति से एकाकार नहीं माना जा सकता है। यह एकाकार तभी होता, जब यह प्रकृति का स्वभाव होता है। लेकिन गुण प्रकृति का स्वरूप है। इसलिए प्रकृति को त्रिगुणात्मिका या त्रिरूपात्मिका कहा जाता है, न कि त्रिस्वाभावा।

वास्तव में, प्रकृति और गुण एक पद नहीं हैं, बल्कि दो पद हैं। अतः उनमें परस्पर सम्बन्ध है। चूँकि गुण प्रकृति में रहता है, इसलिए प्रकृति आधार है और गुण आधेय। इस दृष्टि से प्रकृति-गुण का सम्बन्ध आधार-आधेय का सम्बन्ध है। यद्यपि प्रकृति का रूप गुण है, और इस दृष्टि से इन दोनों में (प्रकृति-गुण में) तद्रूपता का सम्बन्ध है; फिर भी इन्हें गुण-गुणी नहीं कहा जा सकता। साधारणतः जिसमें गुण रहता है, उसे गुणी कहते हैं। गुण-गुणी का सम्बन्ध समवाय या आन्तरिक (अनिवार्य) सम्बन्ध होता है। जैसे — लाल गुलाब और लाली का सम्बन्ध। लाली गुण है जो लाल गुलाब में सदैव रहता है। किन्तु प्रकृति के तीनों गुण साम्यावस्था में ही पाये जाते हैं। विषमावस्था में ये गुण एक दूसरे पर आधिपत्य जमाते हैं, क्योंकि इनकी मात्राओं में भिन्नता हो जाती है। विषमावस्था विक्षोभावस्था है, जहाँ प्रकृति के गुणों में उथल-पुथल हो जाता है। इसलिए प्रकृति और गुण में समवाय सम्बन्ध नहीं है। प्रकृति और गुण में संयोग सम्बन्ध भी नहीं है, क्योंकि गुण विक्षोभावस्था में भी प्रकृति से बिल्कुल अलग नहीं होता है। मेज और पुस्तक का सम्बन्ध, कलम और अंगुलियों का सम्बन्ध संयोग सम्बन्ध है। इस तरह का सम्बन्ध प्रकृति और गुण में कदापि नहीं होता है। प्रकृति और गुण में स्वरूप सम्बन्ध पाया जाता है। जब दो वस्तुओं का स्वरूप एक ही हो, तो उनमें स्वरूप सम्बन्ध होता है। जिस प्रकार प्रकृति अनादि,

अनन्त, अजा, अव्यक्त, प्रधान है, उसी प्रकार गुण भी अनादि, अनन्त, अज, अव्यक्त, प्रधान है। अतएव स्वरूप की दृष्टि से वे एक हैं, परन्तु स्वभाव में नहीं।

प्रकृति मात्र एक है, जबकि गुण तीन हैं। तीनों गुणों के स्वभाव अलग-अलग हैं। अतः गुण विविध स्वभाववाला होता है, जबकि प्रकृति एकस्वभावी है, अर्थात् प्रकृति का स्वभाव एक ही प्रकार का होता है। ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित सांख्यकारिका के अनुसार सत्वगुण का स्वभाव लघु, प्रकाशक और आनन्दस्वरूप होता है, रजगुण का स्वभाव चंचल और उत्तेजक होता है तथा तमगुण का स्वभाव गुरू और अवरोधक होता है। लघु का अर्थ हल्का है, सूक्ष्म है। इस गुण के कारण वस्तुएँ उर्ध्वगामी होती हैं, योगी और तपस्वी अत्यन्त सूक्ष्म वस्तुओं की ओर अपने को उन्मुख कर पाता है। प्रकाशक का अर्थ प्रकाशित करनेवाला है। सत्वगुण के कारण ही मनुष्य विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है। ज्ञान प्राप्त करना ही प्रकाशित होना है। ज्ञानप्राप्ति आनन्द प्रदान करती है। रजगुण उत्तेजना पैदा करनेवाला है, जिसके कारण मनुष्य और वस्तुएँ क्रियाशील होती हैं। यह चंचल होता है, जिसके कारण यह सदैव गतिशील रहता है और प्रत्येक वस्तुओं एवं जीवों को भी गतिशील और सक्रिय करता है। इसी की प्रेरणा से सत्वगुण प्रकाश फैलाता है, और तमगुण अंधकार देता है। जिस प्रकार नदी का सतत बहता जल-प्रवाह अपने साथ तृण (घास, तिनका) आदि को बहाता हुआ ले जाता है, उसी प्रकार रजगुण स्वयं क्रियाशील होकर अन्य गुणों को भी क्रियाशील बनाता है। इसी गुण के कारण इन्द्रियाँ चंचल होती हैं, और वे अपने विषयों की ओर प्रवृत्त होती हैं। चित्त-की चंचलता के मूल में रजगुण ही है। गुरू का अर्थ भारी, स्थूल होता है। भारीपन या स्थूलता आलस्य पैदा करता है। आलस्य से अकर्मण्यता उत्पन्न होती है। फलतः मनुष्य कोई कार्य नहीं करना चाहता है, न ही ज्ञान-प्राप्ति के लिए उत्सुक होता है। इसलिए तमगुण को अवरोधक कहा जाता है। अवरोध अर्थात् रुकावट डालनेवाला, बाधा पहुँचानेवाला अवरोधक कहलाता है। क्रियाशीलता और ज्ञानप्राप्ति में बाधक होने के कारण ही तमगुण अवरोधक है।

इस प्रकार तीनों गुणों के स्वभाव एक दूसरे से बिल्कुल विपरीत हैं। सत्वगुण श्वेत, रजगुण रक्तिम (लाल) और तमगुण कृष्ण (काला) रंग का होता है। श्वेत रंग ज्ञान का प्रतीक है, लाल रंग सक्रियता का बोधक है तथा कृष्ण (काला) रंग मोह, आलस्य, उदासीनता, निद्रा, तन्द्रा आदि का सूचक है। सत्वगुण सुखदायी है, रजगुण दुखदायी है, तथा तमगुण मोहदायी है। यही कारण है कि विश्व के सभी पदार्थों (सजीव-निर्जीव) में सुख, दुःख और मोह के भाव होते हैं। चूँकि ये भाव विश्व के सभी पदार्थों में हैं, और तीनों गुणों के ये स्वभाव हैं; इस आधार पर त्रिगुण का ज्ञान होता है। दूसरे शब्दों में इन तीनों गुणों का प्रत्यक्ष ज्ञान संभव नहीं है। विश्व के पदार्थों के व्यवहार के आधार पर ही इनका ज्ञान होता है। विश्व के कुछ पदार्थों से सुख मिलता है, तो कुछ से दुःख मिलता है, और कतिपय ऐसे पदार्थ भी हैं जो मोह पैदा करते हैं। इस आधार पर तीन गुणों को जाना जाता है। इसलिए त्रिगुण को अनुमानजन्य कहा गया है। प्रकृति भी अनुमानजन्य है, क्योंकि उसका ज्ञान त्रिगुण के आधार पर ही होता है।

यद्यपि तीनों गुण एक दूसरे के विरोधी हैं, फिर भी इनका एक सामान्य या सम स्वभाव है कि ये परस्पर एक दूसरे से इस तरह गूंथे रहते है कि इन्हें एक दूसरे से अलग करना उसी तरह मुश्किल होता है, जिस तरह तीन रेशों से ऐंठकर या गूंथकर बनायी गयी रस्सी

वे एक दूसरे से स्वतंत्र होते हैं; लेकिन प्रकृति से वे तीनों गुण साथ-साथ अभिन्न रूप में रहते हैं। इसलिए त्रिगुण का प्रकृति से अलग अपना कोई अस्तित्व नहीं होता है।

संकेत

1. सांख्य दर्शन के प्रवर्त्तक कपिल हैं।
2. मूलतत्त्व दो है—प्रकृति और पुरूष। प्रकृति के तेईस विकार हैं।
3. सांख्य दर्शन पचीस या छब्बीस तत्त्वों को मानता है। इसलिए इसे 'सांख्य' कहते हैं।
4. प्रकृति त्रिगुणात्मिका है। तीन गुण हैं— सत्व, रज, तम।
5. प्रकृति और गुण में आधार-आधेय, तद्रूपता और स्वरूप सम्बन्ध है।
6. प्रकृति और गुण में गुण-गुणी, समवाय और संयोग सम्बन्ध नहीं है।
7. त्रिगुण के स्वभाव में विरोध है, फिर भी उसमें सहचार सम्बन्ध है।
8. सत्वगुण श्वेत, लघु, प्रकाशक और आनन्दस्वरूप है।
9. रजगुण रक्तिम, चंचल, उत्तेजक और दुःखस्वरूप है।
10. तमगुण कृष्ण, गुरू, अवरोधक और मोहस्वरूप है।
11. त्रिगुण का ज्ञान अनुमानजन्य है।
12. बनावट और उद्देश्य की दृष्टि से त्रिगुण
13. त्रिगुण सहचारी, सहायक और
14. त्रिगुण निरन्तर परिवर्त्तनशील ह। ...
    विरूप।
15. सरूप साम्यावस्था है। यह प्रलय की अवस्था है।
16. विरूप विक्षोभावस्था है। यह सृष्टि की अवस्था है।

❑